हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा जवाहर नवोदय विद्यालय, रिकोंगपिओं, जिला किन्नौर में प्रकृति : छात्र-वैज्ञानिक मिलन कार्यक्रम का आयोजन

प्रकृतिः छात्र- वैज्ञानिक मिलन कार्यक्रम के अंतर्गत **हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला** द्वारा दिनांक 09.08.2019 को **जवाहर नवोदय विद्यालय, रिकोंगपिओ, जिला किन्नौर** के 6-12वीं कक्षा तक के लगभग 95 विद्यार्थियों को संस्थान के मुख्य तकनीकी अधिकारी, श्री अखिल कुमार ने कार्यक्रम

के आरम्भ में विद्यालय के सभी अध्यापकों व विद्यार्थियों को अभिनंदन किया साथ ही उनका इस कार्यक्रम में अपनी-अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आभार प्रकट किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् जो कि पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के अधीन एक स्वायत्त संस्था है, के बारे में भी अवगत करवाया।वानिकी अनुसंधान एवं पर्यावरण के क्षेत्र में अग्रणी कार्य कर रही है। उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के क्षेत्राधिकार के तहत पश्चिमी हिमालयी राज्यों - हिमाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर एवं लद्याख में वानिकी अनुसंधान तथा पर्यावरण संरक्षण के बारे में जानकारी उपलब्ध करवाई। उन्होंने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून, नवोदय विद्यालय समिति, एवं केन्द्रीय विद्यालय संगठन के बीच हुए **प्रकृति कार्यक्रम** के अंतर्गत हुए समझौता ज्ञापन व इसके उद्येश्यों के बारे में विद्यालय को अवगत करवाया। श्री अखिल कुमार ने बताया कि आज का **प्रकृति कार्यक्रम** पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सराहनीय कार्य है। उन्होंने पर्यावरण एवं वानिकी गतिविधियों के बारे में उपयुक्त जानकारी प्रदान की तथा कहा कि बढ़ती जनसंख्या व अत्यधिक निर्माण कार्यों की वजह से हमारे वन अत्यधिक दबाव में है, जिनका समयानुसार निवारण करना अत्याधिक आवश्यक है। उन्होंने आगे सतलुज नदी की वानिकी गतिविधियों द्वारा पुनरूद्धार करने बारे महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

तत्पश्चात संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक, डा. संदीप शर्मा ने पर्यावरण एवं जैव-विविधता के बारे में विद्यार्थियों को अवगत करवाया। उन्होनें बताया कि जैव-विविधता का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है।

जैव-विविधता के बिना पृथ्वी पर मानव जीवन असंभव है। जैव-विविधता भोजन, कपड़ा, लकड़ी, ईंधन, चारा की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। जैव-विविधता कृषि पैदावार बढ़ाने के साथ-साथ रोग-रोधी तथा कीटरोधी फसलों की किस्मों के विकास में सहायक होती है। वानस्पतिक जैव-विविधता औषधीय आवश्कताओं की पूर्ति भी करती है। जैव-विविधता पर्यावरण प्रदूषण के निस्तारण में भी सहायक होती है। जैव-विविधता में संपन्न वन पारितंत्र कार्बनडाईऑक्साईड के प्रमुख अवशोषक होते हैं। कार्बनडाईऑक्साईड हरित गृह गैस है

जौ वैश्विक तपन्न के लिए उत्तरदायी है। इसके उपरान्त उन्होंने वृक्षारोपण तकनीकों पर छात्रों के लाभ के लिए विस्तृत चर्चा की।

डा. शर्मा ने लगभग 50 छात्रों को प्रस्तुतिकरण के माध्यम से जैव-विविधाता (जैविक-विविधता) जीवों के बीच पायी जाने वाली विभिन्नता जो कि प्रजातियों में, प्रजातियों के बीच और उनकी पारितंत्र की विविधता को भी समाहित करती ह के बारे में जानकारी दी। जैव-विविधता तीन प्रकार की होती है। 1. आनुवंशिक विविधाता, 2. प्रजातीय विविधता तथा 3. पारितंत्र विविधता। प्रजातियों में पायी जाने वाली आनुवंशिक विभिन्नता को आनुवंशिक विविधता के नाम से जाना जाता है। यह आनुवंशिक विविधता जीवों के विभिन्न आवासों में विभिन्न प्रकार के अनुकूलन का परिणाम होती है। प्रजातियों में पायी जाने वाली विभिन्नता को प्रजातीय विविधता के नाम से जाना जाता है। किसी भी विशेष समुदाय अथवा पारितंत्र (इकोसिस्टम) के उचित कार्य के लिये प्रजातीय विविधता का होना अनिवार्य होता है। पारितंत्र विविधता पृथ्वी पर पाई जाने वाली पारितंत्र में उस विभिन्नता को कहते हैं जिसमें प्रजातियों का निवास होता है। पारितंत्र विविधता विविध जैव-भौगोलिक क्षेत्रों जैसे- झील एवं मरुस्थल आदि में प्रतिबिम्बित होती है। उन्होंने कहा कि किस तरह से पौध रोपण करना अनिवार्य है तथा कम से कम छः वर्ष तक किस तरह से इन पौधों का संरक्षण करना अनिवार्य होता है, के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। अन्त में छात्रों के प्रश्नों का वैज्ञानिक मूल्यांकन करते हुए उत्तर दिए।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य डा. श्रीवास्तव ने डा. संदीप शर्मा, श्री अखिल शर्मा व उनकी टीम का विद्यालय के छात्रों को प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करने के लिए धन्यवाद किया। उन्होंने

कहा इस तरह के कार्यक्रम से निश्चय ही छात्र -नवयुवक लाभान्वित होंगे एवं विशेष विषयों में जागरूक होकर देश तथा प्रदेश की उन्नति में सहायक सिद्ध होंगे। उन्होंने इस कार्यक्रम की पहल के लिए संस्थान के निदेशक तथा परिषद् के महानिदेशक का भी तहदिल से आभार प्रकट किया और कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों में विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर विद्यार्थियों को जानकारी प्राप्त होती रहे।

प्रकृति कार्यक्रम रिकाँगपिओ की प्रमुख झलकियां

****